(११) मणियों के पलने में...

मणियों के पलने में स्वामी महावीर
झूला झूले रे भैया हाँ हाँ रे झूला झूले ॥ टेक ॥

पलना में रेशम की डोरी पड़ी है, वा में मणियन की गुरिया जड़ी है
त्रिशला माता झूलाये रहि रे, झूला झूले... ॥ 1 ॥

कुण्डलपुर वासी बोले सारे, वीराकुंवर की जय जय कारे
दर्शन कर चरणा छूले रे। झूला झूले.... ॥ 2 ॥

चुटकी बजाय रही, हँस हँस खिलाय रही
होले-होले से झूला झूलाय रही
घर-घर बाजे बधाई रे, झूला झूले... ॥ 3 ॥

इन्द्र भी आवे इन्द्राणी भी आवे, देश-विदेश के राजा भी आवे
चरणों में भेंट चढ़ाय रहो रे। झूला झूले... ॥ 4 ॥